एकलव्य का प्रकाशन

हड्डी

और अन्य नाटक

हड्डी

तथा अन्य नाटक

चकमक में प्रकाशित नाटकों का संकलन

एकलव्य का प्रकाशन

हड्डी और अन्य नाटक

Haddi Aur Anya Natak

चकमक में प्रकाशित नाटकों का संकलन

आवरण: विवेक

© एकलव्य

पहला संस्करण: मार्च, 1997/3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रण: मार्च, 1999/5000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रण: मई, 2004/3000 प्रतियाँ
तीसरा पुनर्मुद्रण: सितम्बर, 2007/3000 प्रतियाँ
चौथा पुनर्मुद्रण: जुलाई, 2008/3000 प्रतियाँ
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: अक्तूबर, 2010/3000 प्रतियाँ
70 gsm मेपलिथो व 170 gsm आर्ट कार्ड कवर
यह किताब मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
एवं सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।

ISBN: 978-81-87171-14-0
मूल्य: ₹ 32.00

प्रकाशक: **एकलव्य**
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोन: (0755) 255 0976, 267 1017
फैक्स: (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीय: books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रक: आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल फोन: (0755) 2687 589

आपस की बात

चकमक एकलव्य द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

चकमक के लिए सामग्री खोजते समय यह हमेशा महसूस होता रहा है कि बच्चों के लिए अच्छे नाटकों की कमी है। ऐसे नाटक बहुत कम देखने को मिलते हैं जिन्हें न केवल बच्चों को खेलने में मज़ा आता हो बल्कि साथ ही साथ उनमें बच्चें के मन की बात कही गई हो।

ऐसे ही प्रयास के तहत चकमक में प्रकाशित तीन नाटकों का यह संकलन प्रस्तुत है। ये नाटक हम इनके रचनाकारों क्रमशः सर्वश्री असगर वजाहत, भारत रत्न भार्गव तथा सुधाकर प्रभु के सौजन्य से इस संकलन में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पहले दो नाटकों के चित्र वे ही हैं जो चकमक में प्रकाशित हुए थे। तीसरे नाटक *पुस्तक हंडी* के चित्र पुनः बनवाए गए हैं।

पुनः प्रकाशन हेतु सहर्ष सहमति देने के लिए एकलव्य रचनाकारों तथा चित्रकारों का आभारी है।

आशा है बच्चों के बीच ये नाटक पसन्द किए जाएँगे। वे इन्हें खेलकर आनन्द का अनुभव करेंगे।

● **एकलव्य समूह**

हड्डी

❑ असग़र वजाहत

दृश्य एक

(मंच पर जंगल का दृश्य लगा हुआ है। पेड़–पौधे, लताएँ तथा विभिन्न प्रकार के वृक्षों से पूरा मंच सजा हुआ है। जंगली जानवरों के बोलने तथा चिड़ियों के चहचहाने आदि की आवाज़ें आ रही हैं। रात का पिछला पहर समाप्त हो रहा है। प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता है। प्रकाश के साथ - साथ आवाज़ें बढ़ती जाती हैं। पानी बहने या झरने के गिरने की आवाज़ भी स्पष्ट रूप से सुनाई देने लगती है। दूर से घुंघरू बजने की आवाज़ निकट आती जाती है और एक वृक्ष के पीछे से निकलकर परी सामने आ जाती है। कुछ देर नृत्य करने के बाद परी गाती है।)

परी : नन्हे, मुन्ने प्यारे बच्चो
नटखट बच्चो, चंचल बच्चो
आओ सुनाएँ तुम्हें कहानी
आओ सुनाएँ तुम्हें कहानी।

बहुत साल पहले यह धरती
गरम आग का गोला था
फिर धीरे-धीरे धीरे-धीरे
ठण्डी होती गई ये धरती

इसी बदलती धरती की
ये सच्ची एक कहानी है।

(नाचते हुए परी वृक्षों के पीछे चली जाती है और धीरे-धीरे प्रकाश समाप्त हो जाता है।)

दृश्य दो

(मंच पर जंगल का वही पुराना दृश्य। धीरे-धीरे प्रकाश बढ़ता है। मंच के तीनों ओर से चूहों का प्रवेश। चूहे नृत्य करते मंच के बीचों-बीच आ जाते हैं। सब चूहे मिलकर गाते हैं।)

चूहों का समूहगान :

ये पूरा जंगल हरा भरा
ये पेड़ लता ये वसुंधरा
ये चंचल झरनों का पानी
पानी पर बादल की छाया

ये घिरते बादल घुमड़-घुमड़
ये आते बादल उमड़-उमड़
सब सबका है, सब सबका है
हर चीज़ यहाँ हम सबकी है

हम मिल-जुलकर सब रहते हैं
जो होता है सब सहते हैं।

(धीरे-धीरे मंच के पीछे से कुछ और चूहे आते हैं। चूहों की पहली मंडली पीछे हट जाती है और दूसरी मंडली मंच के मध्य में आ जाती है और वह समूहगान प्रारम्भ करती है।)

चूहों की दूसरी मंडली का समूहगान :

नौकर मालिक कोई नहीं
सेवक स्वामी कोई नहीं
मेरा तेरा कोई नहीं
सब सबका है, सब सबका है
सब सबका है, सब सबका है

जब भूख लगे तब खाते हैं
जब नींद लगे तब सोते हैं
जब आँख खुले तब उठते हैं
जब जी चाहे तब गाते हैं

(अंतिम पंक्ति पर सभी चूहे समूहगान और नृत्य में शामिल हो जाते हैं।)

दृश्य तीन

(जंगल का पुराना दृश्य। आँधी चलने की आवाज़ आती है। दूर से कुत्तों के रोने की आवाज़ भी आती है। प्रकाश बहुत कम है और पूरा वातावरण बोझिल बोझिल-सा लग रहा है। फिर किसी ख़तरनाक जानवर के चलने तथा डँगालें टूटने की आवाज़ के साथ मंच पर बिल्ले का प्रवेश।)

बिल्ला : मैं बिल्ला, शेर हूँ जंगल का

मैं चूहों को खा जाता हूँ
मैं शक्तिवान हूँ शक्तिवान
मैं चूहों को खा जाता हूँ।

मुझको आता हुआ देखकर
चूहे सब छिप जाते हैं
पर उनको खोज ही लेता हूँ
मैं उनको खूब सताता हूँ
फिर उनको मैं खा जाता हूँ
आज भी मुझको भूख लगी है।

कहाँ हैं चूहे सारे?
काँपते होंगे डर के मारे
अच्छा तो छिप जाता हूँ मैं
जब निकलेंगे चूहे चुहियाँ
तब मैं उनको खा जाऊँगा
पेट की आग बुझा जाऊँगा।

(बिल्ला छिप जाता है। कुछ देर बाद चूहे निकलते हैं। सब डरे हुए हैं। एक चूहा आगे है, बाकी सतर्कता से उसके पीछे हैं।)

चूहा-1 : देखो देखो देखो देखो
देख के देखा चल मेरे भाई
हाँ मेरे भाई हाँ मेरे भाई
बिल्ला हमको खा जाएगा
पकड़ेगा चबा जाएगा।

(अचानक बिल्ला निकलकर हमला करता है और चूहे भागते हैं और वह एक चूहे को पकड़ लेता है। चूहा चिल्लाता है। बिल्ला उसको खा जाता है। धीरे-धीरे मंच पर अंधकार।)

दृश्य चार

(जंगल के कोने का उदास दृश्य। सब चूहे चुपचाप उदास बैठे हैं। कुछ रो रहे हैं, कुछ अपने हाथों से अपने चेहरे छिपाए हैं।)

चूहा-1 : रोने से क्या काम चलेगा
बात बहुत गम्भीर है भाई
ऐसी कुछ तरकीब करें हम
मिल-जुलकर कुछ काम करें हम

चूहा-3 : सीधे सादे चूहे हैं हम
मिल-जुलकर सब रहते हैं हम
किसका क्या कुछ लेते हैं हम
फिर क्यों बैरी पीछे पड़ा है।

चूहा-4 : बिल्ले से लड़ने की सोचो
उससे अब भिड़ने की सोचो
जब तक हम सब डरते रहेंगे
तब तक हम सब मरते रहेंगे

चूहा 1 : बात पते की कहते हो
लेकिन उससे कैसे भिड़ें
पंजे उसके बड़े-बड़े हैं
दाँत हैं उसके पैने पैने
दुम उसकी रस्से की तरह है
खाल है उसकी गैंडे जैसी
उसके मुँह से खून लगा है।

(चूहा-3 को अचानक सामने पड़ी किसी जानवर की बड़ी-सी हड्डी दिखाई देती है। वह हड्डी उठा लेता है और उसका नुकीला सिरा देखता है और खुश हो जाता है।)

चूहा-3 : देखो इसको देखो इसको
मुझको यह हथियार मिला है
देखो इसको देखो इसको
कितना पैना कितना पैना
कितना मोटा कितना मोटा
(सब चूहे हथियार देखते हैं)

चूहा-3 : अब डरने की बात नहीं है
कल जब बिल्ला आएगा
तब मैं उसको आगे बढ़कर
ऐसा हाथ एक मारूँगा
कि चीं चीं चीं करता
बिल्ला भाग ही जाएगा।

दृश्य पाँच

(जंगल का दृश्य जहाँ एक ओर बिल्ला खड़ा है और दूसरी ओर चूहे पंक्ति में खड़े हैं। सबसे आगे चूहा-3 खड़ा है और उसके हाथ में नुकीली हड्डी है।)

बिल्ला : वाह री किस्मत वाह री किस्मत
सारे चूहे अपने आप
मरने को तैयार खड़े हैं।
मरने को तैयार खड़े हैं।

चूहा-3 : हम तुमसे कमज़ोर नहीं हैं
हम कोई मजबूर नहीं हैं

बिल्ला : *(ठहाका)*
तेरी मौत ही आई है
या आँखें पथराई हैं
देख ये मेरे पंजे देख
देख ये मेरा बाजू देख
देख ये मेरी ताकत देख

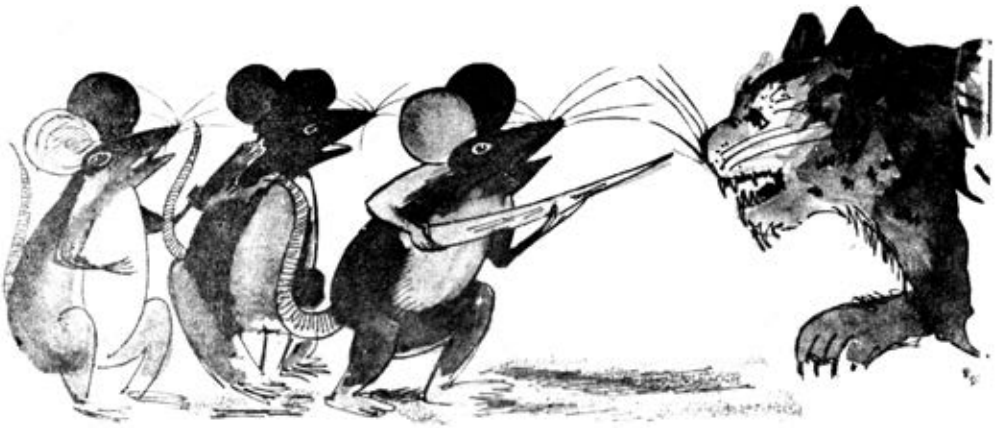

(बिल्ला हमला करता है। चूहा-3 अपनी हड्डी निकालकर उसे मार देता है। वह चोट खाकर गिरता है। चूहा फिर हड्डी मारता है।)

चूहा-3 : देख सम्भल जा मोटे बिल्ले
राह पे अपनी आ जा बिल्ले

(बिल्ला उठकर झपटता है। चूहा फिर मारता है, वह गिरता है।)

चूहा-3 : देखे तूने मेरे हाथ
ये सब भी हैं मेरे साथ
मिलकर सब वार करेंगे
तुझको हम बर्बाद करेंगे।

(बिल्ला उठकर भाग जाता है। चूहे खुशी में चिल्लाते हैं।)

दृश्य छह

(चूहा-3 बहुत प्रसन्न है। वह जंगल में अपनी हड्डी लिए घूम रहा है। वह बहुत निडरता से इधर-उधर देख रहा है और गा रहा है।)

चूहा-3 : कैसी अच्छी चीज़ मिली है
मेरी तो तकदीर खुली है
बिल्ला मुझसे डरता है
नहीं वो मुझसे लड़ता है

कैसी अच्छी चीज़ मिली है
मेरी तो तकदीर खुली है
अब है मेरे हाथ में ताकत
ताकत ताकत ताकत ताक़त

इतनी ताक़त इतनी ताक़त
जितनी किसी के पास नहीं है।

(चूहा-2 आता है)

चूहा-2 : प्यारे भाई मेरे भाई
देखें तुम्हें क्या चीज़ मिली है।

(चूहा-3 हड्डी से मारता है। चूहा-2 गिर पड़ता है।)

चूहा- 3 : देखा तुमने देखा तुमने
देखा तुमने छोटे चूहे
कितने कमज़ोर हो तुम चूहे
कितने मजबूर हो तुम चूहे

(और भी चूहे आ जाते हैं और सब चूहा-2 को घेरकर खड़े हो जाते हैं।)

चूहा-3 : देखो तुम सब ध्यान से सुन लो
आँखें खोलो कान से सुन लो
जब भी वह बिल्ला आएगा
उससे मैं लड़ने जाऊँगा

तुम सब मेरे पीछे रहोगे
कहना मेरा मानोगे तुम
बात न मेरी टालोगे तुम

मुझको नेता मानोगे तुम
मुझको स्वामी मानोगे तुम
मुझको रक्षक मानोगे तुम।

चूहा-1 : मेरे भाई बात सुनो तुम
हम सब चूहे भाई भाई हैं
(चूहा-3 बढ़कर उसे हड्डी मारता है। वह गिर जाता है।)

चूहा- 3 : जो मैं तुमसे कहता हूँ
उस पर तुम सब अमल करो
जाओ जाकर जंगल में
एक महल तैयार करो
उसमें अब मैं रहा करूँगा
तुम सब पहरा दिया करोगे।

दृश्य सात

(जंगल में ही चूहे-3 का दरबार लगा हुआ है। वह अपने सिंहासन पर बैठा है। सामने पंक्ति में हाथ बाँधे चूहे खड़े हैं। दो चूहे पीछे खड़े चूहा-3 को पंखे झल रहे हैं। चूहा-3 चमकीले, महँगे कपड़े पहने है।)

चूहा-3 : ***(चूहा-1 से)***
तुमसे मैंने कल ही कहा था
काम तुम्हारा है फल लाना
आज सुबह कहाँ गए थे
फल चट करके भाग गए थे।

चूहा-1 : नहीं नहीं मालिक सरकार

चूहा-3 : नहीं नहीं अब मार पड़ेगी
तभी ये बातें ध्यान चढ़ेंगी।

(चूहा-4 से)
चलो इसे तुम मारो खूब

चूहा-4 : मैं इसको क्यों मारूँ भाई

चूहा-3 : अगर नहीं तुम बात सुनोगे
अगर नहीं तुम इसे धुनोगे
तो मैं तुमको इस हड्डी से
मार मार के खत्म करूँगा।

(चूहा-4 उठकर चूहा-1 को मारने लगता है)

चूहा-3 : तुम सब इसको ठीक से समझो
मैं राजा हूँ मैं स्वामी हूँ मैं मालिक हूँ
जो भी तुमको हुक्म सुनाऊँ
उसको फौरन पूरा करो तुम
तुम जाओ जूते चमकाओ
तुम जाओ खाना पकवाओ
तुम जाओ पानी भर लाओ
तुम जाओ कपड़े धो लाओ
तुम जाओ पहरेदारी पर
तुम अब मेरा बदन दबाओ
तुम सब मेरे नौकर हो
अब तुम सब मेरे नौकर हो।

दृश्य आठ

(रात का दृश्य।जंगल में चूहे बहुत उदास और परेशान बैठे हैं। कुछ कराह रहे हैं। कुछ रो रहे हैं। कुछ चूहे लेटे हुए हैं। कुछ पेड़ों के सहारे बैठे हैं। दूर से घुंघरू की आवाज़ आती है। परी चूहों के पास आती है। चूहे उठकर खड़े हो जाते हैं और परी को घेर लेते हैं और मिलकर गाते हैं।)

कितना अच्छा जीवन था,
कितना अच्छा जंगल था
कितना प्यार था हम सब में
कितने अच्छे बीते दिन थे

अब हम दुख में डूब गए हैं
अब हम दिन दिन खटते हैं
रातों में सब रोते हैं
दिन में सब मेहनत करते हैं
एक दूसरे के दुश्मन हैं
एक का जूता एक का सिर है।

परी हमें समझाओ कुछ
कैसे अब हम राह निकालें
कैसे अपने कदम बढ़ाएँ
कैसे अपनी रात बिताएँ
कैसे अपने दिन काटें

परी : देखो प्यारे चूहो देखो
एक तुम्हारा साथी तुमको
करता है कितना हैरान
लेकिन सोचो मिलकर सोचो
राह कोई निकलेगी सोचो
बात बनेगी मिलकर सोचो
दुख में घुलने से अच्छा है
मिलकर सोचो राह निकालो

(चूहे सिर जोड़े मिलकर बैठ जाते हैं। परी नाचती हुई चली जाती है।)

दृश्य नौ

(चूहे का दरबार लगा हुआ है।)

चूहा-1 : हुजूर सुना है हम सबने
बिल्लों की एक फौज बड़ी सी
हम पर हमला आज करेगी

चूहा-3 : तुम लोग नहीं घबराओ बिल्कुल
मैं अपने हथियार को लेकर
उनको मार भगाऊँगा
तुम सब मेरे पीछे रहना
जैसे मैं कहता जाऊँगा
वैसे करते जाना तुम सब।

चूहा-1 : ठीक बात है ये सरकार
लेकिन बात सुनें सरकार
बहुत सालों से हथियार आपका
वैसे का वैसा ही धरा है
उसको हम सब साफ करेंगे
उसको हम चमका देंगे
फिर जब बिल्ले हमला करेंगे
अपनी मौत आप मरेंगे।

चूहा-3 : ठीक है लेकिन तुम हथियार
धीरे-धीरे साफ करो
नोक को उसकी तेज़ करो
मैं जाता हूँ सोने अब
तुम सब मिलकर काम करो।

(चूहा-3 अपना हथियार देकर चला जाता है)

सब चूहे : रगड़ो रगड़ो इतना रगड़ो
इतना रगड़ो इतना रगड़ो
इतना रगड़ो इतना रगड़ो
जिससे यह पूरा हथियार
टुकड़े टुकड़े टुकड़े होकर
बिल्कुल ही हो जाए बेकार।

(सब चूहे मिलकर हथियार पत्थरों पर रगड़ते हैं और वह छोटे-छोटे टुकड़ों में बदल जाता है। चूहा-3 आता है।)

चूहा- 3 : कहाँ गया मेरा हथियार?
साफ किया मेरा हथियार?

चूहा-1 : साफ किया इतना चमकाया
इतना चमकाया इतना चमकाया

(हाथ में हथियार का छोटा-सा टुकड़ा लेकर उसे दिखाता है)

लेकिन फिर ये टूट गया।
टुकड़े टुकड़े टूट गया।

(चूहा-3 गुस्से में पागल हो जाता है। वह चूहा-1 की तरफ झपटता है, पर चूहा-1 उसे धक्का देता है। वह गिर जाता है। फिर चूहा-3 दूसरे चूहों की तरफ बढ़ता है। वे सब उसे धकियाते हैं।

अंततः चूहा-3 पागल-सा हो जाता है। अपने ही बाल नोचने लगता है। दूसरे चूहे हँसते हैं और मिलकर गाते हैं, चूहा-3 पागलपन में अपना सिर पटकता और बाल नोचता रहता है।)

चूहों का कोरस : नौकर मालिक कोई नहीं
सेवक स्वामी कोई नहीं
तेरा, मेरा कोई नहीं
सब सबका है, सब सबका है
जब भूख लगे तब खाते हैं
जब नींद लगे तब सोते हैं
जब आँख खुले तब उठते हैं
जब जी चाहे तब गाते हैं।

समाप्त

सभी चित्र : विवेक

पंचतंत्र की एक कहानी का नाट्य रूपांतरण

शास्त्र देखो शास्त्र

❑ भारत रत्न भार्गव

(पाँच या छः लड़के-लड़कियों का मंच पर प्रवेश। इनमें से एक गुरू बन जाए बाकी सब चेले।)

चेला-एक : पूज्य गुरू जी।

गुरू : बोलो बच्चो।

चेला-दो : हमें आपने ज्ञान दिया।

गुरू : हाँ, हाँ बच्चो।

चेला-तीन : हमें आपने ध्यान दिया।

गुरू : हाँ, हाँ बच्चो।

चेला-चार : कर्म की राह हमें दिखलाई।

गुरू : हाँ दिखलाई।

चेला-दो : मेरी शिक्षा पूर्ण हो गई?

(गुरू उत्तर नहीं देते। इधर-उधर टहलने लगते हैं।)

सभी : पूज्य गुरू जी।

गुरू : बोलो बच्चो।

सभी : हमारी शिक्षा पूर्ण हो गई?

(गुरू फिर उत्तर नहीं देते।)

चेला-दो : पूज्य गुरू जी क्या मैं घर संसार बसाऊँ?

चेला-तीन : क्या मैं अपना ब्याह रचाऊँ?

गुरू : प्यारे बच्चो, तुमको घर संसार बसाना है?

चेले : हाँ गुरू जी।

गुरू : तुमको अपना ब्याह रचाना है?

चेले : हाँ गुरू जी।

गुरू : आशीर्वाद तुम्हें है मेरा। जीवन में तुम सफल कहलाओ। अन्तिम बात तुमसे कहनी है।

चेले : आज्ञा गुरू जी।

गुरू : मैंने चारों वेद पढ़ाए।

चेले : हाँ गुरू जी।

गुरू : मैंने तुमको धर्म सिखाया।

चेले : धर्म सिखाया।

गुरू : मैंने तुमको कर्म बताया।

चेले : कर्म बताया।

गुरू : जग की रीति तुम्हें समझाई।

चेले : हाँ समझाई।

गुरू : क्या तुम सब कुछ सीख गए हो?

(सब चुप रहते हैं।)

चेला-एक : इसका उत्तर हम क्या देंगे।

चेला-दो : अच्छा हो यदि ले लें सबकी आप परीक्षा।

चेला-तीन : अगर सफल होवें हम उसमें तो समझें हम सीख गए हैं।

गुरू : अच्छा बच्चो ये बतलाओ, सबसे बड़ा धर्म जीवन का क्या होता है?

सब : प्यार गुरू जी।

चेला-एक : सब धर्मों का ये है सार। सभी मानवों के प्रति प्यार।

गुरू : तुमने उत्तर सही बताया। लेकिन यह तोते-सा रटना है।

'सबसे प्रेम न करना सीखा,
तो यह ज्ञान अधूरा फीका।'

पोथी रटकर तो कोई भी पंडित कहला सकता है।

'ज्ञान वही है जिसका जग में होता है व्यवहार,

जिसका कुछ उपयोग न होवे वो शिक्षा बेकार।'

चेले : वो शिक्षा बेकार, वो शिक्षा बेकार, वो शिक्षा बेकार।

(सब मिलकर गाते हैं।)

गुरू : चार लड़कों की तुम सुनो कहानी, कैसे मूरख बन जाते हैं पंडित-ज्ञानी।

चेले : मूरख बनते पंडित-ज्ञानी?

गुरू : हाँ, कान्यकुब्ज के रहने वाले चारों लड़के,
लौटे बारह बरस बाद शास्त्रों को पढ़के।
रट डाले सब शास्त्र और उपनिषद, वेद सब।
सोचा सबने हुए बड़े भारी पंडित अब।

चेले : हुए बड़े भारी पंडित अब।

गुरू : लेकिन वो सब रट्टू तोते,
नहीं जगत का ज्ञान।
मूरख बनकर वो पछताए,
हँसता सकल जहान।

सब : हँसता सकल जहान, हँसता सकल जहान!
हँसता सकल जहान, हँसता सकल जहान!!

(गाते-गाते मंच से बाहर निकल जाते हैं। चार लड़कों का प्रवेश।)

एक : हमने चारों वेद पढ़े हैं। शास्त्र और उपनिषद पढ़े हैं। बोलो भैया...

सब : हाँ, भई हाँ।

दो : हम दुनिया में सबसे ज्ञानी। मूरख जग के सारे प्राणी। बोलो भैया...

सब : हाँ, भई हाँ।

तीन : जब पहुँचेंगे हम अपने घर।
दिग्गज हम से जाएँगे डर।
ज्ञान पताका फहराएँगे।
सबको चटनी चटवाएँगे। चलो पंडितों...

सब : हाँ, भई हाँ।

चार : जल्दी-जल्दी।

सब : हाँ, भई हाँ।

दो : देख-भाल के।

सब : हाँ, भई हाँ।

तीन : अब रुक जाओ।

एक : क्यों, भई क्यों?

तीन : देख रहे हो, दो राहें हैं अब आगे की ओर। और ये तय करना बहुत ज़रूरी है, कौन नगर की ओर जा रही, कौन दूसरी ओर। कैसी सोची?

दो : बड़ी दूर की कौड़ी लाया।

एक : इसमें तीर कौन-सा मारा। ख़ास बात है, पता लगाना सही राह का। बोलो इसकी क्या तरकीब?

दो : सोचो भैया मिलकर सोचो।

(सब सोचते हैं, निर्णय नहीं कर पाते।)

तीन : मुझको सूझी बड़ी दूर की।

एक : जल्दी बोलो।

तीन : तुम दो जाओ एक राह पर। हम दोनों इस ओर।

(सब एक दूसरे की तरफ देखते हैं।)

दो : पचास प्रतिशत सही। दोनों तरफ जाने पर सही रास्ता मालूम हो ही जाएगा। लेकिन जो गलत दिशा में चले जाएँगे वो?

सब : वो ssss?

तीन : बात पते की कही।

चार : इस सबसे एक बात साबित हुई। ***(सब आश्चर्य से उसे देखते हैं।)*** हम सबमें नम्बर चार यानी कि मैं सबसे अधिक अक्लमंद हूँ।

सभी : कैसे?

चार : चूँकि इस मसले पर मैंने कोई राय नहीं दी। और शास्त्रों में लिखा है - 'दुविधा की

स्थिति में मौन रहना सबसे उत्तम है।' कहो लिखा है?

सब : हाँ, भई हाँ।

एक : यह एक दुविधा की स्थिति है इसलिए शास्त्रों के अनुसार हमें चुप रहना चाहिए।

सब : हाँ, भई हाँ।

(सब चुप होकर बैठ जाते हैं। 'दो' बोलने को होता है। 'एक' इशारे से चुप कराता है। एक ओर से कुछ लोग आते हैं। उनमें से चार आदमियों के कन्धों पर एक अर्थी है। अर्थी ले जाने वाले सभी दूसरी ओर को चले जाते हैं।)

दो : यही है रास्ता। ये लोग इधर से आए हैं। जिधर से लोग आए हैं वही रास्ता है।

तीन : रास्ता यह नहीं, वह है। जो गंतव्य की ओर जाता है वही रास्ता होता है।

चार : सुनो, कोई निर्णय देने से पहले ये बताओ कि ये लोग कौन थे? और क्या लिए जा रहे थे?

एक : इनके सिर पर पगड़ियाँ थीं इसलिए ये या तो क्षत्रिय थे या महाजन।

तीन : लेकिन इनके पास शस्त्र नहीं थे इसलिए ये क्षत्रिय नहीं हो सकते।

दो : तो ये महाजन थे। अब तय करो कि ये क्या ले जा रहे थे।

तीन : इनके हाथों में सिरकी या बाँस जैसी कुछ चीज़ थी। और यह जंगल में पैदा होती है इसलिए...

एक : गलत। महाजन हमेशा लाभ की वस्तु से हाथ लगाते हैं इसलिए यह कोई बहुत कीमती वस्तु होगी। जैसे-जैसे..

चार : महाजन। महाजन। मिल गया।

दो : क्या?

चार : शास्त्र देखो शास्त्र।

(अपने झोले में से पुस्तक निकालता है। पन्ने पलटता है। पढ़ता है।)

महाजनो येन गतः स पन्थाः, यानी जिस मार्ग से महाजन जाएँ वही मार्ग है।

सब : वही मार्ग होता है।

एक : चलो।

सब : हाँ, भई हाँ।

(सब उसी रास्ते से जाते हैं जिससे महाजन अर्थी ले गए थे।)

दो : यह तो नगर नहीं है। यहाँ तो मुर्दे जल रहे हैं।

चार : जहाँ मुर्दे जलाते हैं, उसे श्मशान कहते हैं।

तीन : यानी हम श्मशान में आ गए।

सब : ***(रोते हुए)*** यानी हम श्मशान में आ गए हैं।

(तभी एक गधा रेंकता हुआ मंच पर आता है। सब रोना बन्द कर गधे की

तरफ देखते हैं।)

चार : यह क्या है?

एक : कोई जानवर मालूम होता है।

दो : शेर होगा।

(शेर का नाम सुनते ही सब डर जाते हैं। गधा रेंकता है।)

तीन : नहीं, नहीं शेर नहीं हो सकता।

चार : क्यों नहीं हो सकता? कौन-से शास्त्र में लिखा है?

एक : यानी शेर हो सकता है। लेकिन अगर ये शेर होता तो हम सबको खा जाता।

तीन : शेर नहीं है तो फिर यह क्या है?

चार : शास्त्र देखो शास्त्र।

(पुस्तकें निकालते हैं। पन्ने पलटते हैं।)

एक : इस जगह का क्या नाम बताया था तुमने? हम कहाँ आ गए?

चार : हम श्मशान में आ गए।

तीन : इस समय यह प्रश्न नहीं है।

सब : तो क्या प्रश्न है?

तीन : प्रश्न यह है कि यह कौन है? यह क्या है?

दो : ***(अचानक)*** मिल गया। मिल गया। लिखा है - 'राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।' अर्थात् राजद्वार और श्मशान में जो मिले वो भाई होता है।

तीन : अवश्य ही यह हमारा भाई है।

(सब गधे को घेर लेते हैं। 'एक' उसके गले लिपटता है। 'दो' उसके पैर सहलाता है। 'तीन' उसे पुचकारता है। 'चौथा' गधे से लिपटता है, तो गधा दुलत्ती मारता है। 'चार' उछलकर दूर जा गिरता है।)

चार : हाय-हाय, मार डाला, मर गया रे। ***(गधे को मारने को आता है।)***

तीन : अरे-अरे क्या कर रहे हो। भाई की गलतियों को भी माफ करो।

दो : उसे प्यार करो।

एक : उसे सम्मान दो।

('चार' उसे प्यार करने लगता है।)

चार : अहा, कितना अच्छा है। इसे कहते हैं भाई।

(तभी एक ऊँट वहाँ आता है। इधर-उधर चक्कर काटता है। पहले सब उससे डरते हैं, फिर धीरे-धीरे ऊँट की तरफ बढ़ते हैं। ऊँट तेज़ी से भागता है। चारों उसे पकड़ने दौड़ते हैं। आगे आगे ऊँट, पीछे चारों। मंच पर दो तीन चक्कर लगाते हैं। चारों थककर बैठते हैं। ऊँट दूसरी ओर रुकता है।)

तीन : यह क्या है?

दो : यह कौन है?

एक : बारह वर्ष विद्यालय में बिताए लेकिन ऐसा प्राणी कभी नहीं देखा।

दो : गुरू जी ने भी कभी नहीं बताया।

तीन : शास्त्र में भी इसके बारे में कुछ नहीं लिखा।

चार : पहले उसे पकड़कर लाऊँ?

सब : हाँ, हाँ लाओ।

(चार ऊँट के पास जाता है। ऊँट भागता है। हताश होकर वापस आता है।)

चार : ***(हाँफते हुए)*** मैं नहीं पकड़ सकता।

एक : मैं जाऊँ?

तीन : नहीं, मुख्य प्रश्न यह है कि यह प्राणी कौन है?

दो : इतना तेज़ कौन दौड़ सकता है।

एक : गति, तीव्र गति। ***(सोचते हुए)***

तीन : शास्त्र, देखो शास्त्र।

(पोथियाँ पलटते हैं।)

दो : यह देखो, शास्त्र में लिखा है 'धर्मस्य त्वरितः गति' यानी धर्म की गति में बड़ी तेज़ी होती है।

चार : हाँ, हाँ, ये अवश्य ही धर्म है, तभी मैं पकड़ नहीं पाया।

तीन : धर्म को आज तक कोई नहीं पकड़ पाया है।

एक : धर्म को अवश्य ही साथ में लेना चाहिए। शास्त्रों में लिखा है-
'धर्म विहीन जीवन नरक के समान है।'

दो : जाओ धर्म को साथ लेकर आओ।

एक : यह रस्सी ले जाओ इससे उसे लाने में सुविधा होगी।

(चार ऊँट के गले में रस्सी डालकर उसे पकड़ता है। चारों गाते हैं।)

सब : हमें धर्म मिला, धर्म मिला।
हमें भाई मिला, भाई मिला।

तीन : अभी तो हम नगर तक पहुँचे भी नहीं।

दो : नगर तक पहुँचते-पहुँचते तो हमें न जाने क्या-क्या मिलेगा।

(गधे और ऊँट को एक रस्सी से बाँधते हैं। उनके चारों ओर नाचते हैं। गधा और ऊँट ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हैं। धोबी आता है।)

धोबी : हाय, हाय मेरा गधा।

सब : गधा

धोबी : ***(गधे को पहचानकर)*** यही है, यही है।

(गधे को पुचकारता है और उसकी रस्सी खोलता है।)

एक : यह गधा है?

धोबी : नहीं तो क्या तुम्हारा बाप है।

दो : बाप नहीं यह हमारा भाई है।

धोबी : इसका मतलब यह कि तू भी गधा है।

(धोबी गधे के साथ 'दो' को भी कान पकड़कर ले जाने लगता है।)

दो : अरे, अरे, मार डाला। मार डाला।

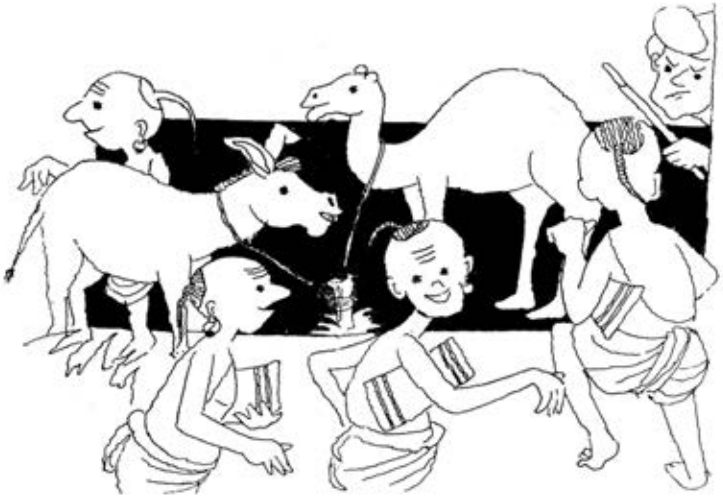

एक : यह क्या करते हो। हमारे भाइयों के साथ ऐसा दुर्व्यवहार।

(तीनों मिलकर दो को छुड़ाने की कोशिश करते हैं। मारपीट होती है। धोबी गधा लेकर जाता है। ऊँट भी भाग जाता है।)

चार : ***(रोते हुए)*** बन्धु गया, धर्म गया, और पड़ी मार रे।

तीन : डंडा लेकर धोबी आया, फोड़ा ये कपार रे।

सब : बन्धु गया, धर्म गया और पड़ी मार रे।

एक : पोथियों का ज्ञान हाय पड़ा नहीं पार रे।

दो : वेद पढ़े, शास्त्र पढ़े, फिर भी गए हार रे।

सब : बन्धु गया, धर्म गया और पड़ी मार रे।

(दो-तीन बार दोहराकर गाते हैं।)

दो : वह धोबी था।

तीन : नहीं, वह धोबी नहीं था।

दो : वह राक्षस था।

एक : हाँ, उसने अपनी माया से हमारे भाई और धर्म को, ऊँट और गधा बना दिया।

चार : वह धर्म विरोधी था। उसने हमारे बन्धु को हमसे छीन लिया।

तीन : वर्ना शास्त्रों में लिखी बातें झूठ थोड़े ही होती हैं।

एक : अब हम इस मायावी राक्षस से सावधान रहेंगे।

दो : चलो नगर की ओर चलें। महान व्यक्तियों के मार्ग में बाधाएँ तो आती ही हैं।

तीन : उठो।

सब : हाँ, भई हाँ।

एक : चलो।

सब : हाँ, भई हाँ।

(कहते - कहते मंच के दो चक्कर लगाते हैं। इस समय इसी तरह के और संवाद जोड़ सकते हैं। मंच के दाईं ओर नदी मान सकते हैं।)

दो : रुको!

सब : क्यों, भई क्यों?

दो : नदी आ गई।

तीन : इसको कैसे पार करेंगे?

चार : नाव बनाकर।

दो : नाव कहाँ से आए?

एक : प्रतीक्षा करो थोड़ी देर।

दो : नाव मिलेगी देर-सबेर।

तीन : देखो, देखो। ये क्या है?

चार : पत्ता।

एक : हाँ पत्ता। कैसे मज़े से तैर रहा है। इस पर बैठकर पार उतर जाएँगे।

तीन : लेकिन ये पत्ता है नाव नहीं है।

दो : हम डूब जाएँगे, हम मर जाएँगे।

एक : नहीं, ये पत्ता हमारा उद्धार करेगा। देखो शास्त्रों में लिखा है - 'आगमिष्यति यतपत्रं तदस्मान् तारयिष्यति'। यही हमारा उद्धार करेगा। ***(नदी में उतरकर पत्ता पकड़ता है।)***

एक : अरे, अरे मैं डूब रहा हूँ।

सब : डरो मत तुम्हारा उद्धार होगा।

एक : बचाओ मुझे, बचाओ।

तीन : अरे ये तो सचमुच डूब रहा है।

चार : इसे बचाना ही होगा।

('दो' सहायता के लिए उसे अपना हाथ देता है। दो भी फिसलकर नदी में गिरने लगता है। तीन और चार उसे पकड़ लेते हैं।)

दो : सर्वनाश हो गया। अरे, कुछ करो यह तो गया।

तीन : अरे, चोटी भर रह गई।

(चार पोथी के पन्ने पलटता है।)

दो : याद आया। शास्त्र में लिखा है....

चार : 'सर्वनाशे संम्पुत्पन्ने अर्ध त्यजति पंडितः।' अर्थात् सम्पूर्ण का नाश होते देखकर पंडित लोग आधे को बचा लेते हैं और आधे को त्याग देते हैं।

दो : चोटी पकड़ लो। चोटी।

(तीन उसकी चोटी पकड़ता है। एक डूब जाता है। उसकी चोटी तीन के हाथ में रह जाती है।)

चार : हाय, हाय। 'एक' डूब गया।

तीन : हाय, हाय। 'एक' बह गया।

दो : चिंता की कोई बात नहीं शास्त्रों के अनुसार हमने 'एक' का सम्पूर्ण नाश होते देखकर उसकी चोटी बचा ली है।

चार : हाँ लेकिन 'एक' हमें छोड़कर चला गया।

(तीनों मिलकर रोते हैं।)

दो : रोना-धोना बन्द करो और नगर की ओर चलो।

तीन : लेकिन यह नदी...

चार : किनारे-किनारे चलो।

सब : हाँ, भई हाँ।

तीन : चलो भाईयो।

सब : हाँ, भई हाँ।

(मंच के एक-दो चक्कर लगाते हैं।)

दो : रुककर देखो।

चार : क्या, भई क्या?

दो : नगर आ गया।

सब : हाँ, भई हाँ।

तीन : अब हमें नगरवासियों के सामने पंडितों की तरह व्यवहार करना चाहिए।

चार : कैसे?

दो : यदि बात करें तो सूक्तियों में अन्यथा...

चार : अन्यथा?

दो : मौन रहना चाहिए।

तीन : शायद कोई आ रहा है। यहीं बैठ जाओ।

(एक व्यक्ति आता है।)

व्यक्ति : प्रणाम ब्राह्मण देवता।

(मौन रहकर तीनों आशीर्वाद देते हैं।)

व्यक्ति : आप कहाँ से आए हैं?

(इशारे से बताते हैं कि 'बहुत दूर से'।)

व्यक्ति : आप लोग बोलते क्यों नहीं? क्या आपने मौन धारण किया है?

(तीनों हाँ में सर हिलाते हैं।)

व्यक्ति : मैं आपकी क्या सेवा करूँ?

(तीनों एक - दूसरे की तरफ देखते हैं। दो भूख का इशारा करता है। तीन, चार भी हाँ में सिर हिलाते हैं।)

व्यक्ति : आपके भोजन की व्यवस्था? मेरे अहोभाग्य। आप मेरे साथ पधारें।

(तीनों उसके पीछे जाते हैं। इशारे में बात करते हैं।)

व्यक्ति : आइए, बैठिए।

(व्यक्ति तीनों को बैठाकर चला जाता है।)

दो : ***(चुपके से)*** भोजन करते समय भी मौन रहना है क्या?

तीन : अगर बोलो तो शास्त्र सम्मत। समझे।

चार : वर्ना चुप रहना ज़्यादा अच्छा है।

(व्यक्ति तीनों को खाना परोसता है।)

व्यक्ति : भोजन ग्रहण कीजिए।

दो : ये क्या हैं? लम्बी-लम्बी, दीर्घ-सूत्री।

व्यक्ति : ये सेमई है, ख़ास घर की बनी।

तीन : सेमई! ये क्या होती हैं।

व्यक्ति : ये एक प्रकार का भोजन है।

(चौथा शास्त्र पलटता है।)

चार : ठहरो, अभी ग्रहण मत करना।

सब : क्या हुआ?

चार : शास्त्र में लिखा है - 'दीर्घ-सूत्री विनश्यति'। अर्थात् लम्बे तंतुओं वाली वस्तु नष्ट हो जाती है। ये नष्ट होने वाली वस्तु को हमने ग्रहण कर लिया .....

तीन : तो हम भी नष्ट हो जाएँगे।

व्यक्ति : यह क्या कह रहे हैं आप। यह तो स्वादिष्ट व्यंजन है।

चार : तुम्हारा मतलब है शास्त्र झूठे हैं?

तीन : हम शास्त्र पारंगत हैं। हमारा आचरण शास्त्र के अनुसार होता है।

व्यक्ति : आप दूसरी चीज़ खाइए।

दो : ***(रोटी उठाकर)*** यह क्या है? बड़ी-बड़ी गोल-गोल।

व्यक्ति : ये रोटियाँ हैं, रोटियाँ।

तीन : रोटियाँ?

(तीनों पोथियाँ पलटते हैं।)

दो : देखते हैं, ये शास्त्र सम्मत हैं कि नहीं।

तीन : इसे खाने से कोई अनिष्ट तो नहीं होगा।

चार : मिल गया। लिखा है - 'अति विस्तार विस्तीर्ण तद्भवेन्न चिरायुषम्।' अर्थात् बहुत फैली हुई वस्तु आयु को घटाती है।

दो : आयु को घटाती है!

तीन : हम इसे नहीं खा सकते।

व्यक्ति : आपकी बातें मेरी समझ में नहीं आ रही हैं। खैर आप ये बाटी खाइए।

(बाटी परोसता है।)

दो : अहा! ये ठीक है। गोल-गोल, छोटी-छोटी।

तीन : सुन्दर, अति सुन्दर। छेद भी है इसमें।

चार : रुको, पहले जान लेना ज़रूरी है कि शास्त्र सम्मत है या नहीं।

तीन : ठीक है। ***(शास्त्र पलटता है।)***

दो : क्या कहते हैं शास्त्र?

तीन : 'छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति', अर्थात छिद्र वाली वस्तु में बहुत अनर्थ होते हैं।

चार : अनर्थ होता है।

दो : तुम हमें ऐसी वस्तु खिलाकर हमारा अनिष्ट करना चाहते हो?

तीनों : तुम धूर्त हो, तुम षड़यंत्रकारी हो।

(तीनों मिलकर उस व्यक्ति को घेर लेते हैं। व्यक्ति चिल्लाने लगता है। तीन - चार लोग आते हैं।)

व्यक्ति-दो : क्या बात है? क्या हुआ?

व्यक्ति-एक : ये लोग मुझ पर दोष लगा रहे हैं। मैंने इन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया। ये बदले में मुझे गालियाँ दे रहे हैं।

दो : तुम हमें शास्त्र के विरुद्ध चीज़ें खिलाकर हमारा विनाश करना चाहते हो।

तीन : हमें मारना चाहते हो।

व्यक्ति-दो : ***(पहले व्यक्ति से)*** क्या तुमने इन्हें शास्त्र-विरूद्ध भोजन कराया?

व्यक्ति-एक : नहीं, पहले मैंने सेमई दी। दो इन्होंने नहीं खाई। फिर रोटी भी नहीं खाई। फिर मैंने बाटी परोसी तो ये मुझे गालियाँ दे रहे हैं।

चार : पहले जो वस्तु दी वो दीर्घ-सूत्री थी। फिर फैली हुई बड़ी चीज़ दी। उसके बाद छिद्रों वाली चीज़ दी।

दो : शास्त्रों में लिखा है ये चीज़ें विनाशकारी हैं।

व्यक्ति-दो : तुम लोग पंडित हो।

तीन : हाँ।

व्यक्ति-दो : तुम शास्त्र पारंगत हो।

तीनों : हाँ।

व्यक्ति-दो : असल में तुम तीनों मूर्ख हो।

तीनों : मूर्ख?

व्यक्ति-एक : हाँ, महामूर्ख। ज़रा लाठियाँ लाना। इन्हें थोड़ी अक्ल दे दी जाए।

(तीनों आगे भागते हैं, बाक़ी सब पीछे-पीछे। गुरू और चेले फिर मंच पर आते हैं।)

चेले : गुरू जी।

गुरू : बोलो बच्चो।

चेला-एक : आपने बहुत अच्छी कहानी सुनाई।

गुरू : प्यारे बच्चो सोच समझकर हर काम करो। और...

चेले : ज्ञान वही है जिसका जग में होता है व्यवहार।
जिसका कुछ उपयोग न हो, वो शिक्षा बेकार।
वो शिक्षा बेकार। वो शिक्षा बेकार। वो शिक्षा बेकार।

(गाते-गाते सभी बाहर निकल जाते हैं।)

समाप्त

सभी चित्र : धनंजय

पुस्तक हंडी

❑ सुधाकर प्रभु

(शाम का समय है। छः बजने वाले हैं। घड़ी में काँटा जैसे रुक गया है। छः घंटे बोलते हैं। एक कमरे में दो बच्चे (भाई-बहन), अभिजीत और नंदा पढ़ रहे हैं। उम्र दस-बारह साल। उन दोनों का पढ़ाई में मन नहीं लग रहा है। वो किसी का इन्तज़ार कर रहे हैं। उन्हीं के पास उनके दादा जी आरामकुर्सी पर बैठकर अखबार पढ़ रहे हैं।)

दादा : क्यों बच्चों, आज इस समय तुम लोग घर पर कैसे? मुझे आश्चर्य हो रहा है। हमेशा तो तुम्हारी माँ इस समय तक तुम लोगों को खेल के मैदान से, या फिर पड़ोसियों के घर से बुला-बुलाकर थक चुकी होती है।

अभिजीत : हम दोनों ने तय किया है कि आपसे बात नहीं करेंगे।

नंदा : हमने तो यह सोचा था कि हम आपको यह बात भी नहीं बताएँगे।

दादा : नहीं-नहीं ऐसा मत करना बच्चो। इस घर में तुम लोगों के अलावा मुझसे बात करने के लिए किसके पास फुर्सत है? तुम्हारे पिता जी के पास तो बिल्कुल समय नहीं होता और .... माँ के पास ...।

नंदा : माँ के बारे में नहीं बोलने दूँगी कुछ भी।

अभि : लेकिन दादा जी आप क्यों नहीं डाँटते पिता जी को?

दादा : मैं डाँटू! तुम्हारे पिता जी को?

नंदा : हाँ, खूब डाँटिए। हमें खेलकर आने में ज़रा देर हुई कि कितना डाँटते हैं पिता जी। आज अभि का जन्मदिन है और उन्होंने जल्दी आने का वादा भी किया था। लेकिन फिर भी अभी तक नहीं आए। अगर मैं दादा जी होती न, तो....

दादा : तो क्या करती बेटी?

नंदा : पिता जी को कान पकड़कर उठक-बैठक लगवाती।

अभि : क्या? तू पिता जी को उठक-बैठक लगवाती?

नंदा : मैं नहीं, मैं दादा जी होती न तब!

दादा : वैसे गलती तो हुई है तुम्हारे पिता जी से। ..... तुम्हारी मौसी की तबियत ठीक नहीं है इसीलिए तुम्हारी माँ भी दो दिन से घर पर नहीं है। नहीं तो अभि को अच्छा लगने वाला श्रीखंड हमें भी खाने को मिल जाता।

अभि : देखा नंदा! जन्मदिन को याद रखने के लिए दादा जी को सिर्फ श्रीखंड की ही याद आई। जैसे श्रीखंड के अलावा कोई और चीज़ हमें अच्छी ही नहीं लगती।

नंदा : और नहीं तो क्या। पिछले महीने जब मेरा जन्मदिन था तो माँ का पहला सवाल था, नंदा बताओ क्या पसंद है तुम्हें। गुलाबजामुन बनाऊँ या रसगुल्ले? ***(माँ की आवाज़ की नकल करती है)***

दादा : क्यों शैतान, और इतनी महँगी फ्रॉक खरीदी वो?

नंदा : मुझे नहीं चाहिए फ्रॉक-व्रॉक। पड़ोस की नीलू के पास देखा और मेरे लिए भी ले आईं। मुझे किताबें चाहिए।

दादा : क्या? अभी स्कूल खुले छः महीने नहीं हुए और तुम्हारी किताबें गुम गईं?

अभि : दादा जी, नंदा स्कूल की किताबों के बारे में नहीं कह रही है! हमें चाहिए कहानी की किताबें।

दादा : अरे लेकिन .....। सालगिरह पर मिठाई और कपड़े आए तो क्या बिगड़ गया?

नंदा : अब दादा जी आप ही बताइए, मंझले चाचा की सुमति की शादी तो कपड़े, मौसी के रघु का मुंडन तो कपड़े, दशहरा आया तो कपड़े, दीपावली आई तो कपड़े, मिठाई और पटाखे। हमें जो कहानी की किताबें चाहिए वो लेने के लिए क्या कोई भी त्यौहार नहीं होता?

अभि : होता कैसे नहीं? बहुत अच्छा त्यौहार है लेकिन पिता जी को याद आए तब न?

नंदा : मुझे लगता है पिता जी तुम्हारे जन्मदिन के लिए कुछ लाने बाज़ार गए होंगे। आते से ही कहेंगे ....

अभि : ***(पिताजी की नकल करते हुए)*** अभि ओ अभि, बेटा देर हो गई, वो..... अपने वो मिल गए थे।

नंदा : अच्छा मिला तो मिला, छोड़ ही नहीं रहा था, बहुत बातूनी है। उसकी बातें खत्म ही नहीं हो रही थीं।

दादा : ***(दरवाज़े की तरफ देखते हुए)*** बच्चो अब बहुत हो गया। लो आ गए तुम्हारे पिता जी। अब मैं ही पूछता हूँ।

पिता : ***(जल्दी-जल्दी आते हुए)*** अभि ओ अभि, आज तुम्हारा जन्मदिन है इसलिए ऑफिस से आधा घंटा पहले निकला। पर रास्ते में अपना वो मिल गया था वो...

दादा : देखो राघव तुम्हारे ये बहाने, शब्द और वाक्यों के साथ याद हो गए हैं बच्चों को। अरे आज इस बच्चे का जन्मदिन है, तुम्हें याद भी है कि नहीं?

पिता : क्या मतलब? यही तो मैं बता रहा हूँ कि मुझे देर क्यों हो गई। अभि, इन सारी थैलियों में तुम्हारे जन्मदिन के तोहफे हैं।

नंदा : देखने की क्या ज़रूरत, मैं बताती हूँ क्या लाए हैं। आम की बर्फी और श्रीखंड।

पिता : बिलकुल ठीक और नया टी शर्ट, पेंट और बायस्कोप, जो तुमने माँगा था।

अभि : देखा नंदा। मिठाई, खिलौने, कपड़े! बस, हो गया हमारा जन्मदिन!

पिता : अरे लेकिन, पिछले साल जन्मदिन पर तुम बायस्कोप के लिए ज़िद कर रहे थे न।

अभि : हाँ, मैंने की थी ज़िद। मगर पिछले जन्मदिन पर माँगी हुई चीज़ इस साल मिलेगी? पिता जी मुझे एक बात बताइए, हमें कुछ देने के लिए आप जन्मदिन का इन्तज़ार करेंगे। जन्मदिन का मतलब क्या दीपावली है कि गुजिया कहा तो दीपावली का इन्तज़ार करना पड़ेगा।

नंदा : पिता जी, अभि भैया ने बायस्कोप ख़ुद बना लिया है। इसके लिए उसे ईनाम भी मिला है। वो अनिल के पिता जी हैं न। वो उसे हर जन्मदिन पर किताबें देते हैं। उसी की किताबों में से देखकर अभि ने बायस्कोप बनाया है।

पिता : दो-चार रुपए की किताब दस-बीस मिनट में पढ़ ली, बस खत्म। फिर उसका क्या उपयोग? रद्दी ही बढ़ती है घर में। देखिए पिता जी आज डेढ़ सौ रुपए खर्च किए इस लड़के पर, लेकिन इसे चाहिए किताबें।

अभि : हाँ, वो दो-चार रुपए की किताबें। अनिल की किताबें नहीं देखीं आपने। छुट्टी के दिन मोहल्ले के सारे बच्चे उसी के घर जमा होते हैं। कल हमारे सर भी गए थे उसकी लायब्रेरी देखने।

पिता : तो क्या हुआ? अपने घर भी बुला लो उन्हें।

अभि : काहे के लिए? श्रीखंड खाने?

पिता : मुझे तो तुम बच्चों का कुछ समझ में नहीं आता। किताबों के लिए बेकार की ज़िद लेकर बैठे हो। पिछली बार वो हवाई जहाज़ की किताब के बारे में कहा था। इतना ढूँढकर लाया तो कहने लगे कि वो किसी की जीवनी वाली किताब लेकर आ गए हो।

अभि : और नहीं तो क्या, हवाई जहाज़ कैसे बनता है, उसकी किताब लाने को कहा था आपको, तो आप राईट बंधु की कहानी लेकर आ गए थे।

पिता : लेकिन तुम बच्चों की किताबें मिलती कहाँ हैं? कितना घूमना-ढूँढना पड़ता है, तब कहीं मिल पाती हैं।

दादा : देखो राघव, बच्चे कहते हैं वो कोई बिल्कुल झूठ नहीं है। किताब हाथ में आते ही कैसे शान्त बैठ जाते हैं। हाँ, मुझे याद आया, वो महादेवशास्त्री हैं न। उन्होंने अपने बेटे के जनेऊ में सब बच्चों को कहानी की किताब भेंट में दी थीं।

पिता : लेकिन अब इस भेंट का क्या?

अभि : पिता जी, लाइए वो थैली। मुझे श्रीखंड अच्छा लगता है इसलिए आप बिना भूले ले आए। लेकिन मुझे किताबें भी अच्छी लगती हैं। कहानियाँ पढ़ते हुए श्रीखंड खाने में कितना मज़ा आता।

दादा : राघव बच्चों की पसन्द बदल गई है। उनकी भूख बदल गई है, ये याद रखो।

पिता : मुझे याद है पिता जी, एक बार मैं देर तक बैठकर पढ़ रहा था। तब, 'ये आँखें

फोड़ने का धंधा बहुत हो गया' यह कहकर मेरे हाथ से किताब छीनी थी आपने? आज पोतों के लिए बदल गए हैं आप।

दादा : बदलना ही चाहिए। सच पूछो तो इससे पहले ही बदलना चाहिए था। कल किसका जुलूस था? सारे बच्चों के हाथों में तख्तियाँ थीं -

जब-जब नई किताबें घर में आएँ
तब-तब हम त्यौहार मनाएँ

अभि : पिता जी, दादा जी चलिए। अब याद आया। आप भी चलिए।

पिता : लेकिन कहाँ?

नंदा : बाल साहित्य यात्रा में आज पुस्तक हंडी का कार्यक्रम है। मैंने माधव चाचा से कहा था टिकिट लाने के लिए।

पिता : वह क्यों आने लगा? बैठा होगा कुछ नाटक-वाटक करता हुआ।

नंदा : कुछ भी अपने मन से मत बोलिए। अरे अभि देखो तो माधव चाचा आ गए।

चाचा : चलो बच्चो, मैं तुम्हारे लिए एक शानदार भेंट लाया हूँ। आज अभि का जन्मदिन है। तुमने कहा था न, इसीलिए तुम्हारे लिए पुस्तक हंडी की टिकटें लाया हूँ।

पिता : बार-बार क्या नाटक देखना? किसकी हंडी?

दादा : कहाँ है दही-हंडी?

अभि : दही-हंडी नहीं पुस्तक हंडी। चाचा, अभी आता हूँ तुम्हारे साथ। पुस्तक हंडी में पुस्तकों की भेंट मिलने वाली है, यह सच है न?

नंदा : चाचा मैं भी चलूँगी।

अभि : पुस्तक हंडी, मटकी फोड़ने का खेल है। तुम लड़कियों का वहाँ क्या काम? लड़कियाँ क्या मीनार बनाएँगी?

नंदा : हाँ। पता है, एक दूसरे की पीठ पर चढ़ना, कंधों पर चढ़ना। और क्या?

पिता : कोई नहीं जाएगा। यह हाथ पैर तुड़वाने वाले खेल खेलने के अलावा कोई और काम नहीं है तुम्हारे चाचा के पास?

चाचा : भैया, इस खेल की खूब चर्चा हो रही है। बाल साहित्य सम्मेलन की पुस्तक यात्रा का कार्यक्रम है यह। तुम भी चलो न। पिता जी, आप भी चलिए।

दादा : नहीं! इन बच्चों को खेलने-कूदने दो। तुम लोग भी जाओ। ***(दादा जी अन्दर जाते हैं।)***

अभि : चलो न चाचा, देर हो जाएगी।

पिता : सोचा था आफिस से आने के बाद आराम से लेटकर पेपर पढ़ूँगा। अब यह पुस्तक हंडी।

(पिता, चाचा, अभिजीत, नंदा जाने के लिए स्टेज पर एक चक्कर लगाते हैं।

दूर से ढोलक की आवाज़ के साथ घोषणाएँ सुनाई देती हैं।)

नहीं चाहिए मिठाई फटाके

हमें चाहिए सुन्दर किताबें

अभि : चलो चाचा जल्दी चलो। वो जुलूस देखो कितना आगे निकल गया।

नंदा : अरे, हमारे क्लास की शलाका भी है जुलूस में। पिता जी जल्दी चलिए न।

(चारों स्टेज पर एक चक्कर लगाते हैं। एक ओर से राक्षस का प्रवेश।)

पिता : ***(डरकर पीछे हटते हुए)*** अभि, नंदा भागो! राक्षस ..... मुझे लगता है कि सामने के पीपल वाला राक्षस है।

चाचा : नंदा, अभि, पीछे हटो। अपन लोग दूसरे रास्ते से चलते हैं।

अभि : पिता जी आप ऐसे डर क्यों रहे हैं? यह पीपल वाला राक्षस नहीं है। अपने रत्नाकर मतकरी के नाटक का राक्षस है यह।

पिता : चलो हटो पीछे। बड़ा आया नाटक वाला राक्षस। आखिर है तो राक्षस ही न। जब गर्दनें तोड़कर उनकी माला गले में पहनेगा तब पता चलेगा। नंदा, नंदा। क्या करें इन बच्चों का? अरे माधव देख क्या रहे हो आगे बढ़ो।

चाचा : लेकिन तुम भी आओ न साथ में।

पिता : मैं? नहीं, नहीं तुम ही आगे बढ़ो। आज बच्चे का जन्मदिन है और ये राक्षस सामने आ गया। बच्चों को खा जाएगा। ***(राक्षस रोने लगता है)***

नंदा : तुम वो नाटक वाले राक्षस ही हो न? रोओ मत भैया।

राक्षस : रोऊँ नहीं तो और क्या करूँ? कैसे-कैसे गंदे आरोप लगा रहे हैं मुझ पर। आखिर कितना सहन करे राक्षस भी। कहते हैं राक्षस मतलब क्रूर, दुष्ट, बच्चों को खाने वाले। ***(फिर रोने लगता है)***

अभि : अरे रो क्यों रहे हो? आखिर तुम्हें कहना क्या है बताओ?

राक्षस : बस मैं यूँ ही रो रहा हूँ।

पिता : ये बच्चे हैं या हैवान! देखो राक्षस से दोस्ती कर ली।

नंदा : अरे पिता जी। आप आगे तो आइए आपकी भी पहचान करवा देती हूँ।

अभि : ***(राक्षस से)*** लेकिन तुम जा कहाँ रहे हो?

राक्षस : मैं पुस्तक हंडी में जा रहा था। थोड़ी दूर ही चला था कि रास्ता भूल गया।

अभि : तुम क्यों जा रहे हो पुस्तक हंडी में। पुस्तक हंडी हम बच्चों के लिए है।

राक्षस : ये देखो पुस्तक हंडी का विज्ञापन। इसमें लिखा है यह खेल सबके लिए है। मैं भी हंडी फोड़ने जाऊँगा।

पिता : मैं भी यही कह रहा हूँ। माधव चलो अपन वापस चलते हैं। इस क्रूर राक्षस की संगत में नहीं रहना हमें और अपने बच्चों को भी नहीं भेजना। कोई ज़रूरत नहीं है।

राक्षस : खबरदार जो कोई यहाँ से हिला तो। टाँगें तोड़कर हाथ में दे दूँगा।

पिता-चाचा : बाप रे। ***(घबराते हुए)***

अभि : टाँगें ही तोड़ोगे न?

नंदा : देखो बेकार में हमारे पिता जी और चाचा को डराओ मत। तुम क्या आज नाटक से भाग आए हो?

राक्षस : इस पुस्तक हंडी में जादू का राक्षस और राक्षस का जादू क्या है यह देखना है मुझे। सब बेकार की बातें हैं। हम राक्षसों के क्या घर-बार नहीं हैं? कहते हैं राजकुमारी को भगाने वाला राक्षस! बताओ? बताओ? क्या मैं सचमुच दुष्ट हूँ।

नंदा : नहीं मेरे भैया। तुम जो कह रहे हो वह सच है। हम को राजकुमारी को भगाने वाले, दूर पहाड़ पर छिपाकर रखने वाले राक्षस की कहानियाँ अच्छी नहीं लगती।

राक्षस : मैं भी यही कह रहा हूँ। एक-एक को फाड़कर टुकड़े कर दूँगा।

पिता : मर गए। फाड़कर टुकड़े....मतलब...बहुत ही भयंकर प्रकार है। यह तो मौत ही सामने खड़ी है।

चाचा : कौन मुहूर्त पे हम घर से बाहर निकले थे?

पिता : और नहीं तो क्या? बच्चे का जन्मदिन है आज। श्रीखंड पेट में जाने के बदले हम ही इसके पेट में जा रहे हैं।

राक्षस : देखो बच्चो! यह दुख ही तो मुझसे सहन नहीं होता। इन लोगों को ऐसे डरकर रोते देख मुझे भी रोना आ रहा है। ***(रोता है)*** लेकिन नहीं अब मैं नहीं रोऊँगा।

अभि : तो फिर चलो। लेकिन किताबें नहीं फाड़ना। किताबें फाड़ने के लिए नहीं होतीं।

नंदा : हाँ! सुनो हमारी बहन जी कहती हैं-

राक्षस : नहीं फाड़ूँगा किताबें। अब तो मुझे ले चलोगे?

अभि : पिता जी, चाचा जी! चल रहे हैं न हमारे साथ?

(राक्षस का हाथ पकड़कर नंदा और अभिजीत चलने लगते हैं। पिता जी और चाचा पीछे-पीछे डरते-सहमते चलते हैं।)

नंदा : अरे पिता जी चलिए न जल्दी। अब तक आप लोग का डर नहीं गया। चाचा अब मैं तुम्हें डरपोक कहूँगी।

चाचा : वो क्यों? मैं-मैं बिल्कुल डरा नहीं हूँ। देखो मैं तुम लोगों के आगे चल रहा हूँ।

(अकड़ते हुए चाचा आगे चलने लगते हैं। सामने से डायन आती है।)

पिता : ***(चिल्लाकर)*** नंदा आगे मत जाओ। मायावी डायन है। अभि, वह कोई मंत्र बोलकर तुम्हें कुत्ता, नहीं तो मुर्गा बना देगी।

डायन : ऐसी ही बुरी-बुरी बातें कहो मेरे बारे में। ऐसे ही ताने मार-मारकर अधमरा कर दो मुझे। मैं अच्छी हूँ इस पर कोई विश्वास ही नहीं करता।

नंदा : दीदी दुखी मत होओ।

डायन : क्यों न होऊँ दुखी। क्यों हमारी ऐसी दशा बना रखी है? पुस्तक हंडी में जितनी भी किताबें हैं डायनों की, सबको ले जाकर समुद्र में डाल दूँगी।

चाचा-पिता : दुष्ट कहीं की। तू खुद ही डूब मर समुद्र में।

डायन : देखो-देखो बच्चो, अब मैं बिल्कुल नहीं छोड़ने वाली तुम्हारे पिता-चाचा को।

(हाथ में पकड़ी हुई छड़ी घुमाती है।)

पिता : मर गए, मर गए बच्चे, मर गए। इनकी माँ को क्या बताऊँगा।

(बच्चों को शैतानी सूझती है। जब डायन छड़ी घुमाती है तभी नंदा और अभि, पिता और चाचा की तरफ देखकर भौंकने लगते हैं।)

पिता : देखो, आखिर हो गया न सत्यानाश।

चाचा : इतने प्यारे बच्चों की बोली को क्या कर दिया? दुष्ट कहीं की।

डायन : सचमुच ही यह बहुत प्यारे बच्चे हैं।

पिता : क्या सचमुच तुमने इन बच्चों को कुत्ता बना दिया! मैं तुम्हारे पैर पड़ता हूँ।

चाचा : तेरे को नारियल चढ़ाऊँगा। कहे तो मुर्गा भी, पर इनकी बोली वापस कर दे।

डायन : कुछ नहीं चाहिए मुझे, बस मेरी शर्तें मानो।

पिता : हज़ार शर्तें बताओ। सब मानेंगे, मानता मानेंगे। सब पूरी करेंगे।

डायन : बच्चों को दुष्ट डायनों की कहानी मत सुनाओ। पहली शर्त। दूसरी शर्त 'डायन का जादू' या 'जादू की डायन' इस तरह की किताबें बच्चों को मत दो। तीसरी शर्त

मुझे अपने साथ पुस्तक हंडी में ले चलो।

चाचा : लेकिन पुस्तक हंडी की सारी टिकटें तो खत्म हो चुकी हैं।

बच्चे : भौं-भौं, झूठ-झूठ, बड़ों की सब बातें झूठ।

डायन : झूठ बोले। रुको, बच्चो तुम्हारे पिता को मुर्गा और चाचा को कुत्ता बनाती हूँ।

चाचा : नहीं.....नहीं। ऐसा मत करो, तुम्हारे पैर पड़ते हैं।

(पिता और चाचा दोनों लेटकर साष्टांग प्रणाम करते हैं।)

नंदा : बस पिता जी, अब बहुत हो गया। हम लोग तो सिर्फ नाटक कर रहे थे। कुत्ता थोड़े ही बन गए थे।

राक्षस : चलो दीदी। जल्दी करो। पिता जी, चाचा जी चलिए।

(सब लोग हाथ पकड़कर-चलना शुरू करते हैं। टारज़न का प्रवेश।)

टारज़न : या ऽऽ हू ऽऽ

चाचा : ये कौन है?

नंदा : चाचा जी यह टारज़न है।

टारज़न : या ऽऽ हू ऽऽ।

पिता : क्यों माधव मैट्रिक की परीक्षा के बाद हम लोग इसी की फिल्म देखने गए थे न? पिताजी भेजने को तैयार ही नहीं थे।

चाचा : हाँ, वही तो है। और तुम्हें याद है फिल्म देखकर तुम जीने की रेलिंग पकड़कर फिसल रहे थे और.....

पिता : भूलूँगा कैसे? उसके बाद ही तीन महिने तक पैर में प्लास्टर चढ़ा रहा था। पर यह टारज़न अब यहाँ क्या कर रहा है। अभि, नंदा क्या बात है?

नंदा : टारज़न कह रहा है, वो भी पुस्तक हंडी में चलेगा।

चाचा : अरे भई वहाँ पेड़ पर चढ़कर उछल कूद करनी है क्या?

अभि : क्या चाचा? पुस्तक हंडी मतलब चढ़ना तो होगा ही।

पिता : क्या वहाँ चढ़ना, उछलना, कूदना होगा? तो चलो वापस घर। मेरी तो अभी से कमर टूट रही है।

नंदा : यह क्या पिता जी! किताबें पढ़ना मतलब आँखें फोड़ना, पुस्तक हंडी में जाना तो पैर तोड़ना। कमाल है, इन बड़ों का बर्ताव भी समझ में नहीं आता।

(परी का प्रवेश)

राक्षस : तुम कौन हो?

परी : तुम कौन हो? अच्छा, पहचाना तुम बच्चों के पसंदीदा राक्षस हो।

राक्षस : और तुम परी हो न?

पिता : माधव बच्चों को कहो कोई वर माँग लें। बंगला, गाड़ी, कार....।

चाचा : टी.वी., फ्रिज, मोटर सायकल।

पिता : तू भी पागल है, कार होगी तो मोटर सायकल की क्या ज़रूरत है?

टारज़न : आप लोग लिस्ट बनाइए। बच्चो, परी आज यहाँ आई है हमको स्वागत नहीं करना चाहिए?

राक्षस : हम लोग कोई गाना गाते हैं परी के स्वागत में।

नंदा : हम लोग? पागल हो क्या? परी हमेशा पत्तों में बैठकर गाना गाती है। उसकी आवाज़ से पेड़ों के फूल खिलने लगते हैं।

अभि : पक्षी गाने लगते हैं।

डायन : गाओ न तुम्हारा गाना।

अभि : तुम्हें गाना अच्छा लगता है?

डायन : बच्चो मुझे दुनिया की सारी सुन्दर और अच्छी बातें सुनने की इच्छा होती है। लेकिन हमारे नसीब में तो गालियाँ और ताने हैं।

नंदा : परी दीदी गाओ न एकाध सुन्दर-सा गीत।

परी : गीत फिर कभी, अभी जाती हूँ, बच्चो। आज बच्चों को अच्छे-अच्छे सपने दिखाने की ज़िम्मेदारी मुझ पर है। ***(जाती है)***

नंदा : बहुत हो गया, अब पुस्तक हंडी में जाना है या नहीं?

सब : जाना है।

टारज़न : फिर दोस्तो, जल्दी करना होगा। पुस्तक हंडी का समय हो रहा है।

अभि : लेकिन ज़रा रुकिए। मेरे दोस्त आने वाले हैं।

टारज़न : रुकेंगे। रुकेंगे क्यों नहीं। पुस्तक हंडी का मज़ा सभी मिलकर लूटेंगे। तुम्हारे वो दोस्त...

नंदा : अभि, देखो वो आ गए।

(मराठी की प्रसिद्ध बाल कथाओं के पात्र आते हैं। उनके हाथों में पुस्तकों की तख्तियाँ हैं। और पुस्तक हंडी की घोषणा है।)

राक्षस : अच्छा ये हैं तुम्हारे दोस्त। अरे यह तो साने गुरूजी का नटखट श्याम है। और ये कौन है?

नंदा : यह है 'भा.रा. भागवत' का 'बहादुर फास्टर फेणे'। और वो है 'वि.वि. बोकिल' का 'बसंत'। वो 'सुधाकर प्रभु' का 'राजू प्रधान'।

पेंद्या : रुको।

अभि : तुम कौन हो हमारा रास्ता रोकने वाले?

पेंद्या : मैं पेंद्या ***(मनसुखा)*** हूँ। इस बालमुकुंद कृष्णगोपाल का दोस्त, मार्ग दर्शक.....!

अभि : ***(बीच में टोककर)*** ... इत्यादि, इत्यादि। चलो छोड़ो हमारा रास्ता।

कृष्ण : यह रास्ता मथुरा को जाता है। इस रास्ते से जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति से चंदा इकट्ठा करना हमारा काम है।

नंदा : चंदा हमने कभी का दे दिया, ये रहा हमारा पास।

पेंद्या : ***(पास देखते हुए)*** पुस्तक हंडी! अरे कृष्ण, ये मज़ेदार बात देखी क्या? पुस्तक हंडी के टिकट।

कृष्ण : ***(खुशी से)*** अरे यही वो पुस्तक हंडी है, मुझे भी पुस्तक हंडी में जाना था।

फा. फेणे : किसी ने रोका है क्या?

अभि : पिता जी चलिए इन्हें भी अपने साथ ले चलते हैं।

चाचा : कृष्ण! उधर वो मथुरा के बाज़ार का रास्ता छोड़कर इधर कहाँ आ गए बन्दरों की सेना में।

पिता : क्या? अरे ये तो युगों-युगों का तुम्हारा पसंदीदा दोस्त है। उसका स्वागत करो। बोलो गोपाल कृष्ण की जय।

बच्चे : गोपाल कृष्ण की जय।

पेंद्या : बालमुकुंद की जय।

बसंत : आया-आया रे माखन चोर।

सब : आया-आया रे माखन चोर।

कृष्ण : ***(चिल्लाकर)*** रोको-रोको ये गाना। सब मुझे माखन चोर कहते हैं। मुझे बहुत चिढ़ है इस पदार्थ से। मैं क्या उठते-बैठते यही काम करता हूँ। बच्चों को सिर्फ खाने का ही काम होता है क्या?

बसंत : और नहीं तो क्या? अभी भी तुम्हारे कपड़ों से दही और मक्खन की खुशबू आ रही है।

श्याम : हमें भी ले चलो न एक बार तुम्हारे गोकुल में।

कृष्ण : ले चलूँगा कभी। लेकिन दोस्तो अभी तो पुस्तक हंडी में चलो। मेरी भी इच्छा थी कि कहानियों की किताबें पढ़ूँ। मेरे गोकुल वासियों को तो यह बात कभी समझ नहीं आई। बिलकुल दम घुटने तक उन्होंने मुझे दूध दही में मथ दिया। मुझे भी पुस्तक हंडी में चलना है।

चाचा : पर ये मथुरा का दही-दूध का चंदा वसूलने का काम?

कृष्ण : वो काम अपना यह पेंद्या करेगा।

पेंद्या : वाह रे वाह। मतलब तुम अकेले ही पुस्तक हंडी में जाओगे। कृष्ण तुम अपनी गाएँ

सम्हालो, हम तो जा रहे हैं अपने गाँव।

कृष्ण : पेंद्या! ऐसा क्यों कहता है रे, तुझे छोड़कर क्या अकेला खाऊँगा मैं। फिर वो प्रसाद दही हंडी का हो या पुस्तक हंडी का। मेरे आने तक यहीं रुको, इन गायों को सम्हालो।

(सभी लोग चलने लगते हैं।)

सब : चलो चलो पुस्तक हंडी को चलो।

अभि : चलो जल्दी करो। अब हंडी का समय हो गया। वो देखो हंडी वाले आ गए।

झुको अब फटाफट फटाफट
सीढ़ी लगाओ फटाफट फटाफट
ऊपर चढ़े फटाफट फटाफट फटाफट

नंदा : ये फटाफट-फटाफट क्या है?

कवि : ये बच्चों की कविता है। बच्चों को इस तरह के गीत अच्छे लगते हैं।

अभि : कुछ तो भी! बच्चों को ताल सुर अच्छा लगता है इसलिए कुछ भी खट-खट, फट-फट बच्चों को सुनना पड़ेगा क्या?

कवि : लेकिन ये अच्छे शब्द हैं। खट-खट, फट-फट।

(डायरी खोलकर लिखने लगता है। उधर पुस्तक हंडी में बच्चे एक-दूसरे पर चढ़कर मीनार बनाते हैं।)

कृष्ण : ये सीढ़ी किसने बनाई?

पेंद्या : ***(एक लड़के से)*** कौन, तुम ऊपर चढ़ोगे? हंडी फोड़ने का अधिकार तो हमारे कृष्ण को ही है।

लड़का : वाह, सीढ़ी हमने बनाई है। हम ही चढ़ेंगे।

कृष्ण : दोस्तो लड़ो मत। गोकुल में दही की हंडी मैं फोड़ता था। सच बताऊँ ये पुस्तक हंडी फोड़ने की मेरी बड़ी इच्छा है। तुम लोग अगर पेंद्या की बात मान लो तो मेरी इच्छा पूरी हो जाएगी।

लड़का : ज़रूर फोड़ो। लेकिन किताबों का मेवा इन सभी को मिलना चाहिए।

कृष्ण : आज तक दही हंडी का प्रसाद भी मैंने अकेले नहीं खाया। पुस्तकों का प्रसाद भी सबको मिलेगा।

सभी : तो चलो, कन्हैया आज तुम्हें ही फोड़नी है ये मटकी भी।

पिता : रुको किसी भी शुभ काम से पहले भगवान को याद करना चाहिए।

अभि : अब भगवान को क्या कहना है?

पिता : अरे माधव अपने बाबा साहेब पुरंदर जी का किया हुआ आव्हान बच्चों को सुनाएँ। सुनो सब, 'हमारे देश में, ढोरों को खाने के लिए हरी कोपलें और बच्चों को

खेलने के लिए मैदान मिलने दो।'

सब : हाँ, मिलने दो।

चाचा : उनके ओंठों पर पत्तों पेड़ों की हरियाली के गाने खिलने दो।

सब : हाँ, खिलने दो।

पिता : इस देश के हर स्कूल के पुस्तकालय बाल साहित्य से भर जाने दो।

सब : हाँ, भर जाने दो।

चाचा : हर माँ-बाप को उनके बच्चों के मन की पुस्तकों की भूख समझने दो।

सब : हाँ, समझने दो।

पिता : बाल साहित्य पढ़ने से, उसके चिंतन से बच्चों के मन में सत्यं-शिवं-सुंदरम् जगने दो।

सब : हाँ, जगने दो।

चाचा : बाल साहित्य की ये पुस्तक हंडी घर-घर पहुँचने दो।

सब : हाँ, घर-घर पहुँचने दो।

(लेझिम की ताल पर कृष्ण ऊपर चढ़ता है। हंडी की पुस्तकें बाहर फेंकता है। बच्चे पुस्तकें उठाते हैं।)

समाप्त

मूल मराठी से अनुवाद : जया विवेक। सभी चित्र – सबीना सभरवाल।

लेखक परिचय

❑

'हड्डी' के लेखक श्री असग़र वजाहत जाने-माने कहानीकार तथा उपन्यासकार हैं। कुछ नाटक भी उन्होंने लिखे हैं, जिनमें से 'हड्डी' एक है। वे दिल्ली के जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं। 'हड्डी' चकमक के जून, 1988 अंक में प्रकाशित हुआ था।

❑

'शास्त्र देखो शास्त्र' के लेखक श्री भारत रत्न भार्गव जाने-माने नाटककार हैं। वे वर्षों तक आकाशवाणी और संगीत नाटक अकादमी से जुड़े रहे हैं। 'एकांकी सप्तक' शीर्षक से उनका एक नाटक संग्रह प्रकाशित हुआ है। कई मलयालम नाटकों का हिन्दी अनुवाद भी उन्होंने किया है। 'शास्त्र देखो शास्त्र' चकमक के सौवें अंक (नवम्बर-दिसम्बर 1993) में प्रकाशित हुआ था।

❑

'पुस्तक हंडी' के लेखक श्री सुधाकर प्रभु मराठी में बच्चों के लिए लिखते हैं। वास्तव में यह नाटक 'मराठी बाल कुमार साहित्य सम्मेलन' का प्रचार नाटक है। 'सम्मेलन' महाराष्ट्र के बाल साहित्यकारों की संस्था है, जो सरस तथा सुबोध साहित्य प्रकाशित करके कम दामों पर उपलब्ध करवाता है। 'पुस्तक हंडी' चकमक में अक्टूबर, 1992 में प्रकाशित हुआ था।

बच्चों के लिए

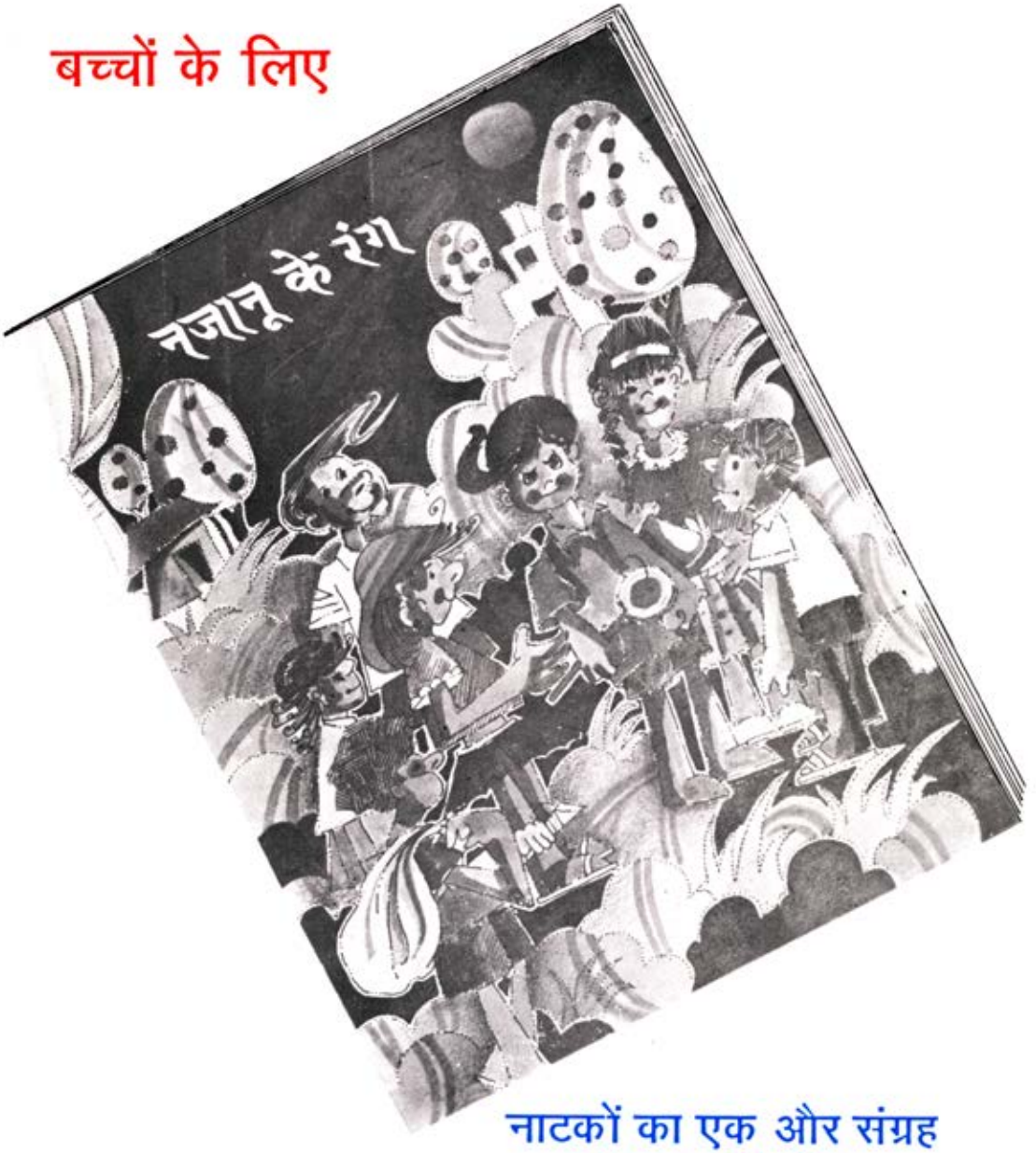

नाटकों का एक और संग्रह

नजानू के रंग

मूल्यः ₹ 28.00

ISBN: 978-81-87171-14-0

मूल्यः ₹ 32.00

A0311H